नहीं था; यह सब तो परमेश्वर श्रीकृष्ण के सर्व आश्चर्यमय रूप के दर्शन का ही प्रभाव था। यहाँ अद्भुतरस का सन्दर्भ है, अतः उसका स्वाभाविक सखाभाव अद्भुतरस से अभिभूत हो गया है और यही कारण है कि अर्जुन में उपरोक्त लक्षण अभिव्यंजित हुए हैं।

अर्जुन उवाच।

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।।१५।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **पश्यामि**=मैं देखता हूँ; **देवान्**=देवों को; **तव**=आपके; **देव**=हे देव; **देहे**=शरीर में; **सर्वान्**=सम्पूर्ण; **तथा**=और; **भूत**=जीवों को; **विशेषसंघान्**=विशेष समुदाय वाले; **ब्रह्माणम्**=ब्रह्मा को; **ईशम्**=शिव को, **कमलासनस्थम्**=कमल पर आसीन; **ऋषीन्**=ऋषियों को; **च**=भी; **सर्वान्**=सम्पूर्ण; **उरगान्**=सर्पों को; **च**=तथा; **दिव्यान्**=दिव्य।

अनुवाद

हे देवाधिदेव श्रीकृष्ण! मैं आपके शरीर में सम्पूर्ण देवों को और नाना प्रकार के अन्य प्राणियों को देख रहा हूँ। कमल पर आसीन ब्रह्मा, शिवजी, ऋषियों और दिव्य सर्पों को भी देखता हूँ।।१५।।

तात्पर्य

अर्जुन श्रीकृष्ण के विग्रह में सारा जगत् देख रहा है। उसे जगत् के प्रथम जीव—ब्रह्मा का और उस दिव्य सर्प का भी दर्शन हो रहा है, जिसकी शय्या पर ब्रह्माण्ड के अधोदेश में गर्भोदकशायी विष्णु शयन करते हैं। इस सर्प-शय्या को 'वासुकि' कहते हैं। वैसे अन्य सर्पों को भी वासुकि कहा जाता है। अर्जुन को गर्भोदकशायी विष्णु से लेकर ब्रह्माण्ड के शीर्षभाग तक का दर्शन हो रहा है, जहाँ जगत् के प्रथम जीव ब्रह्मा का कमल पर निवास है। इसका अर्थ है कि अपने रथ पर बैठे-बैठे उसे आदि से अन्त तक सब कुछ दृष्टिगोचर हो गया। यह परमेश्वर श्रीकृष्ण के अनुग्रह से ही घटित हुआ।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।।१६।।

अनेक=अनेक; **बाहु**=हाथ; **उदर**=पेट; **वक्त्र**=मुख; **नेत्रम्**=नेत्र; **पश्यामि**= (मैं) देख रहा हूँ; **त्वाम्**=आपको; **सर्वतः**=सब ओर से; **अनन्तरूपम्**=अनन्त रूप वाला;